
आलस्य और अलबेलापन - 15

अव्यक्त बापदादा :- (17.05.1973)

» _ » जैसे स्थूल कार्य में लक्ष्य रखने से अगर किसी कारण वश वह अधूरा हो जाता है तो उसको सम्पन्न करने का प्रयत्न करते हो न? वैसे ही रोज के इस कार्य को लक्ष्य रखते हुए सम्पन्न करना चाहिए। एक बात में विशेष अटेन्शन होने से विशेष बल मिलेगा। कोई भी कार्य करते हुए स्मृति आवेगी और स्मृति-स्वरूप भी हो ही जावेंगे। जैसे एक्स्टर्नल नॉलेज में भी अगर कोई पाठ पक्का किया जाता है तो जैसे उसको दोबारा, तीसरी बार, चौथी बार पक्का किया जाता है और उसे छोड़ नहीं दिया जाता, तो ऐसे ही इसमें भी अपना लक्ष्य रख कर एक-एक बात को पूरा करते जाओ।

» _ » इसमें अलबेलापन नहीं चाहिए। सोच लिया, प्लैन बना लिया, लेकिन प्रैक्टिकल करने में यदि कोई परिस्थिति सामने आवे तो संकल्प की दृढ़ता होगी कि करना ही है तो उतनी ही दृढ़ता सम्पूर्णता के समीप लावेगी। वर्तमान समय प्लैन भी है लेकिन इसमें कमी क्या है? दृढ़ता की। दृढ़ संकल्प नहीं करते हो। विशेष रूप में अटेन्शन देकर दिखावे की वह कमजोरी है। **महारथियों को अर्थात् सर्विस एबल श्रेष्ठ आत्माओं को सर्विस के साथ सैल्फ-सर्विस का भी अटेन्शन चाहिए।**

➤➤ ब्राह्मण जीवन के अधूरे कार्य

» _ » व्यर्थ को समाप्त करना

→ निश्चय बुद्धि विजयी आत्माओं की तीन निशानियाँ बाबा ने बताई

■ सदा खुशी में नाचते रहेंगे

■ दूसरों की हिम्मत बढ़ाएंगे, किसी को नीचा दिखाने की कोशिश नहीं करेंगे, नीचे को ऊँचा करेंगे, मास्टर सहारेदाता बनेंगे

■ व्यर्थ से किनारा करना ही विजयी होना है

» _ » ज्ञान की सब्जेक्ट में रहे हुए अधूरे कार्य

» _ » ज्ञान की बातें जो हमें पहले ही कर लेनी चाहिए थी तो अच्छा होता

→ हर प्वाइंट का अनुभव

→ हर प्वाइंट को स्वरूप में लाना

→ Practical में लाना

→ Realization करना

→ हर गुण और शक्ति को समझना

→ **वो जैसा समझाता है उसी अर्थ में ही समझना है**

■ हम व्यक्त में रहकर अव्यक्त को समझने की चेष्टा कर रहे हैं

■ उसने जिस Level पर ज्ञान सुनाया उसी स्थिति में हमें

भी स्थित होना है

► हम देहभान में हैं और वो अव्यक्त में है

- मनन-चिन्तन करना है
- मुरली का बार-बार स्मरण करना है
- समझाना, घुमाना, चारधाम का परिचय देना
- अनुभव की लेन-देन करना
- ज्ञान की मुहावरें, कथा, शब्द, भक्ति के उदहारण या कोई

प्वाइंट समझ नहीं आया तो किसी से पूछना

■ जो हमने संकोचवश किसी से नहीं पूछा

- संस्था का परिचय देना
- म्यूजियम, शांतिवन में समझाना

» _ » योग के Subject में हमारे रहे हुए अधूरे कार्य

- 8 घंटे का चार्ट
- योग में अच्छा अनुभव
- योग में अशरीरीपन का अच्छा अनुभव
- योग में पांच स्वरूपों का बहुत सुन्दर अनुभव
- योग में बीजरूप स्थिति का अनुभव और लम्बे समय तक
- योग में फ़रिश्ते स्वरूप का अनुभव
- योग में सकाश देने का अनुभव

■ नींद का प्रभाव ना हो

- योग में श्रेष्ठ स्वमान में स्थित होना लम्बे समय तक
- अमृतवेला योग जैसा हुआ वैसा नुमाशाम का योग
- सारे दिनभर में भी रूहानी ड्रिल
- आत्मिक दृष्टि का अभ्यास
- योग में अशरीरीपन का टेस्ट एक बार हो जाए तो फिर ये

संसार फीका लगेगा

- Deep Silence का अनुभव

» _ » गुणों के Subject में हमारे रहे हुए अधूरे कार्य

- दिव्य गुण धारण करने हैं
- पहले दिव्य गुणों को जानना है
- फिर चेक करना है मेरे में कौन-कौन से गुण नहीं हैं
- हर कार्य यथार्थ कर रहा हूँ?
- अपनी सेवा के साथ न्याय कर रहा हूँ?
- जो पार्ट मुझे यज्ञ में मिला है क्या मैं Justice कर रहा हूँ?

→ दूसरी आत्माओं में ये गुण हैं तो उनसे पूछना, उनको

Observe करना

→ प्रयत्न करना है की ये गुण मुझमे आये

»→ _ »→ सेवा के Subject में हमारे रहे हुए अधूरे कार्य

→ स्थूल सेवायें जो हमने नहीं की

→ हर प्रकार की सेवा का अनुभव हो

→ रोटी, सब्जी, अनाज Department में सेवा का अनुभव

→ टोली बनाने का अनुभव

→ **भोग बनाने का अनुभव**

→ टेलरिंग का अनुभव

→ भोजन परोसने की सेवा

→ Driving की सेवा

■ किसी मरीज को यहाँ से वहाँ ले जाना

■ जरूरतमंद को कहीं Drop करना

■ **सेण्टर पर रहने वाले भाई-बहनों को Driving आना**

चाहिए

■ तीन Profession संसार में सबसे बड़े होते हैं-

▶ Teacher

▶ Doctor

▶ Driver

→ सेण्टर पर रहकर वहाँ की सफाई करना

→ चाहे पोछा लगाना, बर्तन धोना, भोग लगाना

→ गृहस्थी, सेण्टर पर रहने वालों को, कुमारों को हर एक को

दिन में एक बार गीत लगाकर यथा विधि भोग लगाना ही है

→ मधुबन वाले फल, पानी या कुछ और का भोग लगा सकते हैं

→ लांड़ी

→ ट्रेन में, मंदिरों में सेवा, विदेशी भाई-बहनों की सेवा

→ Conferences में सहयोगी बनना

→ मार्क्स जमा करने के लिए

■ हाजिर होना

■ **सेवाओं के लिए सदा एवररेडी रहना**

■ सहयोग देना

■ सहन करना

■ **तन-मन-धन लगाना**

→ बीमार व्यक्ति की सेवा करना

→ **बीमार व्यक्ति को खाना, जूस, जरूरत की चीज पहुँचाना**

- बीमार व्यक्ति को देखना, मिलना, प्यार से बात करना
 - हॉस्पिटल में बैठकर आत्माओं को मुरली सुनाना
 - समय पर किसी को सहयोग देना
-